अध्ययन करें, सीखें, मार्ग का अनुसरण करें

स्वामी ईश्वरानन्द

अक्षय तृतीया, २०२० के सम्मान में श्रीगुरुगीता का पाठ
शनिवार, २५ अप्रैल, २०२०

नमस्ते।

आपका स्वागत है।

हम यहाँ सिद्धयोग वैश्विक हॉल में हैं, गुरुमाई चिद्विलासानन्द के साथ 'मन्दिर में रहो' सत्संग में भाग ले रहे हैं। भगवान नित्यानन्द मन्दिर से इस सत्संग का सीधा वीडिओ प्रसारण हो रहा है। जैसा कि आप जानते हैं, गुरुमाई जी ने इन सत्संगों को सुन्दर शीर्षक प्रदान किया है : 'मन्दिर में रहो।'

मेरा नाम स्वामी ईश्वरानन्द है। मैं एक सिद्धयोग स्वामी और सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक हूँ। अक्षय तृतीया के इस शुभ दिवस पर आप सबसे बात कर और आपसे जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। वैश्विक हॉल में, सीधे वीडिओ प्रसारण के आरम्भ में आप 'वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश की कलाकृति' का अध्ययन कर रहे थे और स्वयं को उसमें निमग्न कर रहे थे। आपको श्री मुक्तानन्द आश्रम से प्रकृति की सुन्दर तस्वीरें देखने का अवसर मिला जिसमें आश्रम के ऊपर जगमगाते आकाश की तस्वीरें भी शामिल थीं, और आपने बड़े बाबा के तेजोमय स्वरूप के दर्शन किए।

इस सत्संग में हमने भगवान नित्यानन्द की पूजा करते हुए श्रीगुरुमाई के दर्शन किए, तत्पश्चात् हम सबने 'श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम्' का पाठ किया जो कि मांगल्य की मूर्तरूप और सौन्दर्य, समृद्धि व प्रचुरता की देवी, श्रीमहालक्ष्मी की स्तुति है। मुझे आशा है कि आप सभी ने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखी होगी, ख़ासकर श्री मुक्तानन्द आश्रम के समयानुसार कल शाम से। यदि आपने ऐसा किया है तो हो सकता है कि आपने पढ़ा हो कि आज अक्षय तृतीया है, जिसे भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष के साढ़े तीन सबसे शुभ दिनों में से एक माना जाता है।

सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दी गई जानकारी को पढ़कर आपको यह याद होगा कि अक्षय तृतीया के इस दिन और रात का हरेक क्षण अत्यन्त शुभ माना जाता है। और मैं यह कल्पना कर सकता हूँ कि अक्षय तृतीया के बारे में पढ़ने के बाद, आप में से जो लोग एशिया और पैसिफ़िक में रहते हैं जहाँ पर दिन समाप्त होने वाला है या समाप्त हो चुका है, उन्होंने इस अवसर को मनाने के लिए, इसके मांगल्य को याद करने के लिए दिनभर अपने अन्दर से एक नैसर्गिक खिंचाव का अनुभव किया होगा।

हम मन्दिर में हैं। हम वैश्विक हॉल में, भगवान नित्यानन्द और गुरुमाई चिद्विलासानन्द के सान्निध्य में, सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा 'मन्दिर में रहो' सत्संग में हैं।

सिद्धयोग पथ पर :

श्रीगुरु सिखाते हैं। शिष्य अध्ययन करता है।

श्रीगुरु प्रज्ञान प्रदान करते हैं। शिष्य उस प्रज्ञान को आत्मसात् करता है।

श्रीगुरु उपदेश देते हैं। शिष्य चिन्तन-मनन करता है।

श्रीगुरु मार्ग दिखाते हैं। शिष्य उस मार्ग का अनुसरण करता है।

श्रीगुरु निर्देश देते हैं। शिष्य सीखता है।

श्रीगुरु परम सत्य को प्रकट करते हैं। शिष्य उसके सार को अंगीकार करता है।

श्रीगुरु सत्संग प्रदान करते हैं। शिष्य साधना करता है।

श्रीगुरु परमेश्वर की अनुग्राहिका शक्ति हैं। गुरुकृपा की छत्रछाया में साधना करते हुए, शिष्य को मोक्ष की अनुभूति होती है।

मैं आपको एक अनुभव सुनाना चाहता हूँ कि कैसे गुरुमाई जी सिखाती हैं और कैसे उनके शिष्य सीखते हैं व सम्पूर्ण हृदय से उनकी सिखावनियों का परिपालन करते हैं। ३ जनवरी की शाम को श्रीगुरुमाई ने सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड के साथ एक सत्संग किया। इस सत्संग में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया को और ऑस्ट्रेलिया के लोगों व पशु-पक्षियों को अपनी कृपा व आशीर्वाद प्रदान किए क्योंकि कई महीनों से जंगलों में लगी आग के कारण ऑस्ट्रेलिया में बहुत नुकसान हो गया था। 'मधुर सरप्राइज़' में वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई द्वारा सन्देश प्रदान करने के

तुरन्त बाद इस सत्संग का आयोजन हुआ। वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई का सन्देश है, 'आत्मा की प्रशान्ति।'

मैं इस सत्संग का वक्ता था। जब मैं बोल रहा था तो एक मौक़े पर, गुरुमाई जी ने उसी विषय पर कुछ और कहा जैसा कि उन्होंने कई बार किया है। परन्तु इस बार, वक्ता होने के नाते मुझे क्या करना चाहिए, यह मैं ठीक से समझ नहीं पाया और अपने स्थान पर जाकर बैठ गया। गुरुमाई जी ने बस कुछ ही क्षणों के लिए हमें सम्बोधित किया और फिर यह अपेक्षा करते हुए कि मैं आगे बोलूँगा, उन्होंने उस ओर देखा जहाँ मैं पहले खड़ा था—लेकिन, वहाँ तो कोई था ही नहीं! इसके बजाय, मैं तो अपने स्थान पर बैठा था, और बिलकुल निश्चिन्त व खुश दिख रहा था। गुरुमाई जी ने कैमरे की ओर देखते हुए मुझसे कहा और ऑस्ट्रेलिया में सभी लोगों ने इस बात को ध्यान से सुना। गुरुमाई जी ने कहा, "स्वामी ईश्वरानन्द, ऐसे कष्टकर समय में अपनी ड्यूटी निभाते रहिए। यह समय बैठने का नहीं है। आपके पास जो ज्ञान है, यह समय है उसे दूसरों तक पहुँचाने का। ऐसा कीजिए।"

तुरन्त ही, उस सत्संग के वक्ता के रूप में अपनी सेवा के लिए, मैं फिर से अपने नियत स्थान पर आकर खड़ा हो गया। और वह सत्संग बहुत ही शानदार रहा। ऑस्ट्रेलिया में हर सिद्धयोगी ने वह महसूस किया और प्राप्त किया जिसकी उसे आवश्यकता थी।

उसी शाम, सत्संग के बाद मुझे ऑस्ट्रेलिया में रहने वाली एक सिद्धयोगी का ई-मेल मिला जो न्यू साउथ वेल्स के ग्रामीण इलाकों में आग फैलने के बारे में आपातकालीन सन्देश भेजने का कार्यभार सँभाल रही थीं। यह इनकी ज़िम्मेदारी थी कि जैसे ही कहीं आग लगती हुई दिखाई दे तो ये उसके बारे में फ़ौरन अग्निशमन विभाग को और प्रभावित इलाके में रह रहे सभी लोगों को सूचित करें। इनका पद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था।

अपने अवकाश के दौरान ये सिद्धयोगी कुछ मिनट के लिए बैठ गईं और अपने सेलफ़ोन पर सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा, श्रीगुरुमाई के साथ हो रहे सत्संग में भाग लेने लगीं। जैसे ही इन्होंने गुरुमाई जी को यह कहते हुए सुना : "स्वामी ईश्वरानन्द, ऐसे कष्टकर समय में अपनी ड्यूटी निभाते रहिए। यह समय बैठने का नहीं है," इन्हें लगा कि गुरुमाई जी सीधे इन्हीं से बात कर रही हैं। इन्होंने इन शब्दों को श्रीगुरुमाई की ओर से स्वयं अपने लिए एक सिखावनी के रूप में ग्रहण किया और इसलिए ये अपना सेलफ़ोन बन्द करके अपने कार्य-स्थल पर वापस चली गईं, आग लगने के बारे में ताज़ा ख़बर देने के लिए—जो कि इनकी ड्यूटी थी, इनका कर्तव्य था। ऐसा करके इन्हें बहुत सन्तोष हुआ। ये गुरुमाई जी की सिखावनी को जी रही थीं।

सिद्धयोग पथ पर श्रीगुरुमाई के शिष्य यह जानते हैं कि जो कुछ भी गुरुमाई जी कहती हैं वह मात्र किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं होता। श्रीगुरुमाई के शब्दों में सभी के लिए सिखावनियाँ व प्रज्ञान निहित होता है, भले ही गुरुमाई जी किसी एक व्यक्ति से बात कर रही हों।

यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात थी कि ऑस्ट्रेलिया से इन सिद्धयोगी ने मुझे अपना अनुभव बताया। इससे मेरा संकल्प और भी सुदृढ़ बना कि मैं श्रीगुरुमाई की सेवा के लिए उपस्थित रहूँ, सिद्धयोग पथ का अनुसरण करने के लिए सचेत रहूँ, जब किसी को मेरी मदद की आवश्यकता हो तो मैं उपलब्ध रहूँ। विश्व की वर्तमान स्थिति का अर्थ यह है कि लोगों का जीवन ही उलट-पुलट हो गया है। कोरोना-वायरस के फैलने से लोग संघर्ष कर रहे हैं, जो अब एक महामारी बन गया है और जिसका कोई अन्त दिखाई नहीं दे रहा है। हत्बुद्धि कर देने वाली इस समस्या के कारण पूरा विश्व कितना बँट-सा गया है।

परन्तु जो लोग सिद्धयोग पथ पर हैं, उनमें जीवन को सुरक्षा देने वाली सिद्धयोग की सिखावनियों का अभ्यास करने और अपनी साधना में आगे बढ़ने का निरन्तर उत्साह है, तब भी जब हम अपने नए तरह के जीवन और घर पर रहने की नई दिनचर्या के साथ सामंजस्य बिठा रहे हैं। मेरा यह विचार है कि हालाँकि हम इस समय भौतिक रूप से एक-दूसरे से दूर-दूर हैं, परन्तु श्रीगुरुमाई की कृपा के कारण हम यह जानते हैं कि हमारे हृदय हमेशा जुड़े हुए हैं। और आप में से अनेक लोग जो 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में भाग ले रहे हैं, उन्होंने यह बताया है कि वास्तव में दूरी का कोई एहसास ही नहीं हो रहा।

एक सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक होने के नाते मुझे इस बात में सबसे ज़्यादा दिलचस्पी है कि आप किस प्रकार सिद्धयोग की सिखावनियों को सीख रहे हैं और सिद्धयोग के अपने अभ्यासों को सुदृढ़ बना रहे हैं ताकि आप एक सन्तोषपूर्ण जीवन जी सकें, फिर भले ही आपकी जीवन-तरंगें कैसी भी हों — शान्त हों या उथल-पुथलभरी, सुरीली हों या कर्कश, सुखद हों या तकलीफ़देह।

मुद्दा यह है कि एक सिद्धयोगी होने के नाते आप इतने सक्षम हों कि अपनी साधना के फलों का लाभ उठा सकें। जैसा कि कुछ सिद्धयोगियों ने मुझे यह बताया है कि जब उनके चारों ओर सब कुछ अस्त-व्यस्त हो रहा हो, जब हर कोई बावला-सा हुए जा रहा हो, तो वे यह देख पाते हैं कि उनमें अपने केन्द्र से जुड़े रहने और शान्तचित्तता की अनुभूति करने की सामर्थ्य है।

मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आपने जो सिखावनियाँ सुनी हैं, जो अभ्यास किए हैं और इस सत्संग में आपको जो दर्शन प्राप्त हुए हैं, उन पर मनन करने के लिए समय निकालें। यदि आप किसी साधना-सर्कल या अध्ययन-समूह में भाग लेते हैं तो अपनी अन्तर्दृष्टियों और समझ को एक-दूसरे को बताएँ ताकि आप अपनी साधना को सुदृढ़ कर सकें और आप एक-दूसरे को सम्बल दे सकें। आपने कभी-कभी यह देखा होगा कि जब आप अपनी अन्तर्दृष्टियाँ और समझ बता रहे होते हैं तो ऐसा भी क्षण आता है जब आपको लगता है, "अरे वाह।" आप अपने अनुभव में और गहरे उतर पाते हैं और दूसरे भी इससे लाभान्वित होते हैं। निस्सन्देह, हर किसी की दुनिया में कितना कुछ है जिसके बारे में बात की जाए और मैं यह बताना चाहता हूँ—अपनी साधना के अनुभवों के बारे में बात करने जैसा *और कुछ नहीं* है।

गुरुमाई जी, हम बहुत खुश हैं कि हम अक्षय तृतीया मना रहे हैं, आपके सान्निध्य में रहते हुए, आपके साथ; भगवान नित्यानन्द के सान्निध्य में रहते हुए, उनके साथ। हम बहुत खुश हैं कि हम उत्सव मना रहे हैं, भगवान नित्यानन्द के मन्दिर में, आपके आश्रम में।

शुभ अक्षय तृतीया!

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।